62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 948 Participant Code: 108

शिक्षा की नई चुनौतियाँ

शताब्दियों की गुलामी के बाद भारत 15 अगस्त, सन् 1947 ई० को स्वतंतता प्राप्त किया। अब तक हमारा भारत नई योजनाएँ बनाकर विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की सीढ़ी चढ़ रही है। भारत के प्रतिशत 60 लोग आज भी शिक्षा के अभाव के कारण जानवरों जैसा जीवन बिताने में मज़बूद हुआ है। अनेक नागरिकों आजकल भी गरीबी और असहायता के कारण जीवन आगे न चलके नी निद्रा और जाग्रण खो बैठी है। आज भारत के अधिकांश लोगों में घृणा, ईर्ष्या, और असत्य का वातावरण छाया हुआ है। ये सब की फाक की फक उपाय है - शिक्षा। शिक्षा से समाज के प्रत्येक विभागों का भी उन्नति निश्चित है। हमारे प्रथम मुख्य मंत्री जवहरलाल नेहरु की कथन मैं यहाँ उद्धृत करते हैं :-

"भारत के भविष्य आज की युवा पीढ़ी की हाथों में है"

युवकों के विकास से ही भारत ने आज की प्रगति प्राप्त किया है। उसकी कारण हेतू शिक्षा ही है। सभी जनता जीवन में बहुत कुछ सीखता है। वो प्रत्येक समय है 'विद्यार्थी जीवन'।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

विद्यार्थी जीवन में शिक्षा की जबर्दस्त मूल्य है। व्यक्ति के जीवन में कई अनुभवों होती है। लेकिन उनमें से सबसे अनमोल अनुभव विद्यालय से होगी। शिक्षा हमें वो बताती है, सिखाती है, जो हमारे पूरे जीवन में उत्पन्न बाधाओं के सामना करने को हमें सज्ज करते है। शिक्षा प्रकृति माँ की अणु-अणु का परिचय हमें देती है। विद्यालय शिक्षा प्राप्त करने की एक माना है। जीवन के सभी मुसीबतों को शिक्षा से हमें सामना करने का भाव मिल चुकी है। भारत में आज जनता उन्नति की तलाश में भटकती रहती है। उनके ज्ञान से ही आज हम आसमान और समुद्र में जहाजों और वायुयानों से ऊँचाई की पद पर पहूँचा है। भारत के नाम विश्व मंच में प्रस्तुत करने में अई.एस.आर.ओ. की नई चान्द्रयान-3 की देन बहुत बड़ा है। शिक्षा की नई अवसरों ने आज के मानव को विज्ञान की पंखा प्रदान किया है। शिक्षा ने मानव जीवन में एक जबर्दस्त परिवर्तन किया है जिसको हम कल्पना भी नहीं कर सकते है। विज्ञानिक क्षेत्र में भारतवासियों ने इतना देन दी है जिससे आज मानव प्रकृति की हाथों की खिलोना न रहा गया है बल्कि धरती, आसमान और जल-तीनों का स्वामी बन चुका है। शिक्षा की नई अवसरों ने मानव की चिंतावैभव, उनकी आकांक्षाओं तथा स्वप्नों को भी एक नई अध्याय खुला रखा है।

शिक्षा की नई अध्याय मानव के सामने विश्व भर की स्थान प्रस्तुत किया है। जैसे में एक समय था जब ऊँच जाती के लोगों को ही गुरुकुल या विद्यालय से शिक्षा की अधिकार प्राप्त हुई थी। लेकिन उस काले दिन भीत गई और आज की शिक्षा समाज के सभी को एकसाथ प्राप्त है। समग्र शिक्षा अभियान की योजना से केरल में अध्ययन में बहुत कुछ बदल चुका है। बच्चों की अभिरुची पहचानने में ये उनके लिए बड़ा योगदान ही है। पुस्तक के अलावा प्रकृति से और अपने अनुभवों से बच्चे पाठ पढ़ती है। आज की बच्चों के मन में कल की प्रतीक्षा और आकांक्षाएँ रखने के लिए शिक्षा की परिवर्तन अनिवार्य है। लेकिन प्रश्न यह है कि ये वरदान है, या अभिशाप? मेरा मकसद में शिक्षा वरदान ही है। जैसे विज्ञान सबकी भलाई के लिए उत्पन्न और उपलब्ध है, वैसे शिक्षा भी मानव के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अनिवार्य है। फिर भी विज्ञान ~~से~~ के बावजूद लोग नई हथियारों की निर्माण करके युद्ध शुरू करते हैं। यह एक उदाहरण है। शिक्षा को भी दो पहलू है। एक समाज एवं देश की उन्नति केलिए सीढ़ी बनता है, तो दूसरा समाज की नाश करने में उपयोग करते हैं। शिक्षा की नकारात्मकता को दूर करने केलिए उसका सदुपयोग करना अत्यावश्यक है। यही हम सब स्पष्ट है समझाना होगा।

शिक्षा की प्रगति में भी कुछ चुनौतियाँ बीच में उपस्थित है। आजकल शिक्षा युवा पीढ़ी के अभिरुची बढ़ाने केलिए नहीं वो प्रतियोगिता में प्रथम प्राप्त करने को है। बच्चे सीखने की तरीका भी बदल चुका है क्योंकि वो अब शिक्षा से भयभीत है। मेहनत करके उन्नति की आसमान पहुँचने केलिए वो सक्षम नहीं है। माँ-बाँप की, समाज की, पूरे विद्यालय की शोर से मुक्त करने केलिए ही वो पढ़ता है। भारत के प्रतिशत 45 विद्यार्थियाँ आज अपने जीवन नष्ट कर चुकी है। हम सब पाठपुस्तक से बहुत कुछ सीखता है परंतु जीवन में उनकी उपयोग नहीं करते। इसका कारण वो आसान है - वो अपने केलिए ही नहीं सीखता है। आज की दुनिया विज्ञान और तक्नीकी की है। सभी न्यूस हमें हमारा हाथों की मोबैल फोंण से मिलाती है। आज संसार एक सैबर युग बन गई है। इसकी चुनौतियाँ बहुत सारा है। कोई भी मेहनत की असली अर्थ नहीं समझते है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के अनुसार "अपने हिस्से के काम किये बिना भोजन पाना चोर की काम है"। जैसे सूरज दिन भर मेहनत करके संसार को प्रकाशित करते है, वैसे मानव भी परिश्रम और लगाव की बल पर प्रगति की उँचाई में पहुँचता है। नेपोलियन ने कहा था कि "असंभव मूर्खों की शब्दकोश में दिखती शब्द है"।

शिक्षा की एक और चुनौती यह है कि भारत के कई आदिवासी विभागों और कृषकों को अब भी गरीबी और अशिक्षित जीवन बिताना पड़ता है। भारत के कई लोग कृषि पर आधारित होकर गाँवों में रहती है। वे आज भी शिक्षा न मिलकर कृषि में ही जीवन समर्पित किया है। हास्याप्रद विड़म्बना यह है कि देश की अधिकांश लोगों की भूख मिटानेवाले कृषक रोज़ आधा पेट भूख रह जाती है। उन्हें खेती की सही मूल्य नहीं मिलती और सभी उनसे उपेक्षा की मनोभाव प्रकट करती है। जैसे कि नई घर के निर्माण केलिए दिवार फौलादी उठाता है, वैसे समस्याएँ की हल ढूढ़कर नई भारत की नव निर्माण की नींव रखना है। इसलिए किसानों की स्थिति बदलना होगी। उन्हें कृषि के अलावा पशु-संरक्षण, रस्सी बनाना, जैसे विविध क्षेत्रों का भी शिक्षा देकर परिचय कराना है। शिक्षा की अगले चुनौति यह है कि आर्थिक समस्या और बेरोज़गारी। भारत के जनता आर्थिक और सामाजिक समानता नहीं पाया तो ये स्पष्ट है कि हमारे लोकतंत्र खतरे में है। शिक्षा से व्यक्ति के मन और शरीर, दोनों का विकास अनिवार्य है। शिक्षा जनता को आर्थिक समस्या से मुक्त करने की उपाय होना चाहिए। शिक्षा से मानव की ज्ञान बड़ता है जिससे वह उन्नति पर पहुँचता है। आज के नारीयों के स्थिति भी

बदलना चाहिए। अब भी नारी स्वयं सुरक्षित महसूस नहीं करते क्योंकि लोगों की मन में अभी भी वो एक खिलौना है। नारीयो घर के दीवारों से बाहर निकलके नई अवसरों ढूढ़ने लगी है। इससे यह बात स्पष्ट है कि "नारी अबला नहीं सबला है, जीवन कैसे जीना ये उनकी फैसला है"। महिलाओं को अपने हाथोंके गुड़िया बनाने की आदत आज बदलने लगी है। नई शिक्षा उन लोगों केलिए एक नया अध्याय होना चाहिए। विज्ञान की बल पर हम गरीबों और दुर्बल लोगों की मदद केलिए उपयोग करना है। सभी शिक्षा हमे यह समझाता है कि मानव एक सामाजिक प्राणी है और उनकेलिए मानवता ही सबसे प्रधान होती है। शिक्षा पाने की सच्ची अर्थ यह है कि दूसरों के भलाई करना। हम जो भी करते है स्वार्थता केलिए, लेकिन अन्यो की दर्द समझकर सहायता करना ही सच्ची शिक्षा की लक्ष्य है। मानव विकास केलिए शिक्षा उपयोग करना है। आज हमारे संसद द्वारा 'नारी शक्ति बंदन अधिनियम -2023' पारित किया गया है। यह मानव की प्रगति की एक कदम ही है।

शिक्षा से प्राप्त हुए ज्ञान मानव नकारात्मकता केलिए भी उपयोग करते है। मानव के सामने अब परमाणु ऊर्जा की शक्ति स्रोत भी है। ये सब सच्चाई के लिए उपयोग करना है।

शिक्षा विद्यार्थी जीवन की अनमोल धन है। शिक्षा एक ऐसा धन है जो किसी को भी हमसे चुरा नहीं सकता या नष्ट हो सकता है। समय की सही उपयोग से हम शिक्षा पानी है। यही मनुष्य विकास की अनंतर यात्रा मे हमारे सहारा होगी।

मानव आज जो कुछ जीत लिए हो, वो सब शिक्षा की कारण है। मनुष्य जीवन की नया दरवाज़ा खुलाने की चावी है शिक्षा। सारी चुनौतियों की सामना करनेमें हमारे दीप है ये। एक अशिक्षित जीवन साँप की तरह अपने फन फैलाकर भविष्य को डंसने में सामर्थ्य है। सरदार वल्लभभाई पटेल की कथन यह था कि "भारत की आत्मा वहाँ की युवकों की मन में बसती है"। क्योंकि युवको की मन में ही चुनौतियाँ की सागर पार करने की बल है। जैसे असीम अपनी सीमा जानती है वैसे शिक्षा से मानव अपनी सीमा तोड़ देते हैं। शिक्षा के माध्यम अपने साथ में पूरे संसार के अंधकार को दूर करते है जीवन प्रकाशमय बनाती है। आगे की तूफानों की सामना करने के लिए हम, भारत के युवकों शिक्षा की सकारात्मक पहलू को अपनाएँगी। यह ही गाँधीजी की सपनों का भारत है, जहाँ सब एकसाथ अनेकता में एकता लौटाके विश्व की अनंतता की राहें ढूढ़ें।

भारत की भविष्य को अंधकारमय बनाने केलिए जनता की बुद्धि शक्ति प्रथम देन देती है। शिक्षा इसीलिए महत्व है क्योंकि शिक्षा से ही मानव नैतिक गुणों समझता है। शिक्षा जीवन की एक अनमोल धन है इसकी सही प्रयोजन करें। प्रकृति की रक्षा भी शिक्षा की माध्यम है। शिक्षा ही मानव की भविष्य की सीढ़ी है।

X ═══ X

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).